

Workshop Summery and Report

An Awareness Workshop on Water Conservation Under The Virtual Centre of Excellence Known As “Water For Welfare: An Uttarakhand Initiative”

Theme: “Water Conservation: A Shift From Awareness to Consciousness”

Introduction:

Department of Geography and Natural Resource Management organized an awareness workshop on the theme of “*Water conservation: A shift from Awareness to Consciousness*” at the main campus of Uttarakhand Open University, Haldwani (Nainital) on March 20, 2018. The said workshop was held under the Virtual Centre of Excellence known as “Water for Welfare: An Uttarakhand Initiative” with the financial support of Alternate Hydro Energy Centre (AHEC), IIT Roorkee.

Specific objectives of the workshop:

- To create awareness for water conservation by enhancing knowledge and sharing researches.
- To create an attitude towards water conservation, management and development so that a behavioural change can be created amongst all stakeholders.
- To drive people to take part in water conservation and development activities in their environs (wetland, plain, foothill and mountainous areas).
- To provide for a platform to discuss and learn water conservation, management and development techniques and also discuss the concerns for posterity.
- To motivate people towards sustainable use of water and other natural resources through optimum utilization.
- To promote the use of water efficiently in agriculture and domestic use to enhance productivity
- Creating a network of field professionals and stakeholders for future activities.

Summary Report on Proceedings:

Introductory session: Welcome to resource persons and participants, offering bouquets, shawls and mementos to resource persons. Workshop objectives, subject covered.

Three technical sessions: lectures, followed by question-answer sessions.

Sharing of knowledge and experience Session: Open discussion and sharing of experiences and knowledge.

Vote of thanks and Valedictory session:

Resource Persons: Three resource persons were present to share their valuable knowledge and experience with the participants: These resource persons are:

- **Dr. P. K Sharma; A Swachhagrahi Awardee & Associate professor (retired) of Geography, J.V Jain, PG College Saharanpur:**

He has been doing excellent work to rejuvenate a river named Paondhoyi in the city of Saharanpur (UP). This river had become a ganda nala. But with the team efforts it has now crystal clean water. This river flows through Saharanpur city.

- **Dr.P.K.Singh; Professor, G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pantnagar:**

He has been doing research in the field of irrigation technology. He expressed his views and shared his research to use drip and sprinkle irrigation techniques to increase the crop productivity while conserving water.

- **Mr. Siraj Kesar, Editor (Hindi Section), India Water portal:**

He shared his wide experiences regarding water problems of Bundelkhand region, one of the most backward regions in India.

Participants:

- Students of all levels (enrolled in schools, UG, Masters or PhD programs).
- Faculty from any academic/research institution and organisation.
- Hydrologists, water managers, field professionals from government/government-undertaking organisations as well as NGOs.
- Farmers, social workers, media persons.

Details of Subjects Covered:

1. Impact of climate change on water resources.
2. Water-use efficiency.
3. Water management for irrigation and need to conserve water
4. River rejuvenation.
5. Water conservation and sustainable development.
6. Rain-water harvesting.

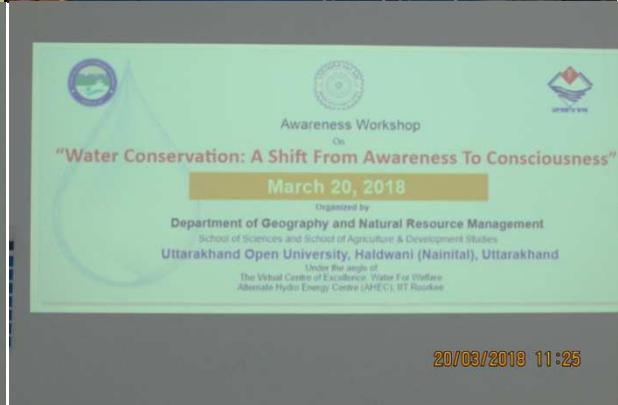
Summary of Outcomes and Way Forward:

- In some parts of India, water has become a political issue, in some social issue and a question of life and death.
- Government of India and state governments have been doing to resolve the issues related to water but situations have been aggravated year by year.
- Rivers are being polluted and contaminated year by year but due to lack of our consciousness towards rivers, our water bodies and sources are being contaminated.

- People have awareness towards water but this awareness needs to drive them to their behavioral change to really conserve water during domestic and agriculture use.
- The convener of the workshop proposes to take this initiative further and to make it a **movement** for water conservation under the theme **“Water Conservation: A Shift From Awareness to Consciousness: Phase-II’** most probably next year.
- There is increased awareness of water conservation amongst most of the participants.
- All participants are now committed to conserve water and to make people in their environs aware to conserve water.
- Some participants have planned to begin a ‘drive to make people aware’.

Photo gallery and Media Coverage:





Media Coverage:

अमर उजाला

जल संरक्षण के लिए जनजागरूकता जरूरी

अमर उजाला ब्यूरो
हल्द्वानी।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को जल संरक्षण को लेकर कार्यशाला आयोजित की गई। मुख्य अतिथि सहारनपुर से आए प्रो. पीके शर्मा ने कहा कि जीवन में पानी की एक-एक बूंद का क्या महत्व है, इसके प्रति लोगों को जागरूक करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में पानी तो है पर पीने लायक नहीं है, इसे स्वच्छ बनाने व इसके संरक्षण को लेकर कार्य करने की आवश्यकता है। भूगोल विभाग की ओर से आयोजित कार्यशाला में यूओयू के निदेशक प्रो. एचपी शुक्ला ने कहा कि पेयजल संरक्षण की आदत हमें बचपन से ही डालनी चाहिए। कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्रा ने कहा कि वर्तमान समय में जल संकट बढ़ता ही जा रहा है, ऐसे में लोगों में जन जागरूकता लाकर



ही इस समस्या से लड़ा जा सकता है। संचालन डॉ. शशांक शुक्ला ने किया। कार्यशाला समन्वयक मो. अकरम ने जल संरक्षण पर रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यशाला में इंडिया वाटर पोर्टल के डॉ. सिराज केशर, पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रो. पीके सिंह, निदेशक प्रो. गिरिजा पांडेय, डॉ. वीरेंद्र कुमार, डॉ. कमल देवलाल, प्रो. पौडो पंत, डॉ. एचसी जोशी, डॉ. चारु पंत आदि थे। ब्यूरो

जल संरक्षण को जागरूकता जरूरी: शर्मा यूओयू में जल संरक्षण पर कार्यशाला आयोजित

संवाददाता

@dainikuttaranchaldeep.com

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में जल संरक्षण को लेकर आयोजित कार्यशाला में बोलते हुए मुख्य अतिथि स्वच्छग्रही की उपाधि प्राप्त डा. पीके शर्मा ने कहा कि हमें अपने जीवन में पानी के प्रति जागरूक होना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में पानी तो है पर पीने लायक नहीं है, इसे स्वच्छ बनाने व इसके संरक्षण को लेकर कार्य करने की बहुत आवश्यकता है, अन्यथा धीरे-धीरे पानी समाप्त हो जायेगा। यूओयू के स्कूल ऑफ साइंस के अन्तर्गत भूगोल विभाग के तत्वावधान में जल संरक्षण: जागरूकता से चेतना की ओर विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बोलते हुए

सहारनपुर से आये सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा. शर्मा ने कहा कि हमारे देश में पानी को पूजा जाता है, फिर भी पानी की गंभीर समस्या बनी हुई है। इस समस्या से निजात तभी मिलेगी जब हम अपने जीवन में पानी के प्रति सोचे और उस पर अमल करें। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए यूओयू के निदेशक प्रो. एचपी शुक्ला ने कहा कि हम सभी को इसका बोध होना चाहिए और इसे गंभीरता से लेना चाहिए। जबकि कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्रा ने कहा कि वर्तमान समय में जल संकट बढ़ता ही जा रहा है, ऐसे में लोगों में जन जागरूकता लाकर इस समस्या से लड़ा जा सकता है। कार्यशाला में इंडिया वाटर पोर्टल के डा. सौराज केशर, पंतनगर विश्वविद्यालय के डा. पीके सिंह ने जल संरक्षण को

लेकर विस्तृत चर्चा की और कहा कि अगर समय रहते इस पर नहीं चेते तो आने वाले समय में पानी को लेकर गंभीर समस्याएं उत्पन्न होंगी। उद्घाटन सत्र का संचालन डा. शशांक शुक्ला ने किया। कार्यशाला में विज्ञान विभाग के निदेशक प्रो. पीडी पंत ने सभी आगन्तुकों का आभार जताया, कार्यशाला समन्यवक मो. अकरम ने जल संरक्षण पर विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यशाला में निदेशक प्रो. गिरजा पाण्डेय, आयोजन सचिव डा. विरेन्द्र कुमार व डा. कमल देवलाल, डा. एचसी जोशी, डा. चारु पंत, डा. श्याम कुंजवाल, डा. रंजू पाण्डे, डा. पूजा जुयाल, शालिनी चौधरी सहित विभिन्न स्थानों से आये अतिथि व विद्यार्थियों के अलावा यूओयू के सभी शिक्षक मौजूद थे।

दैनिक जागरण

कार्यशाला

सभी को जलसंरक्षण का बोध होना जरूरी

जल संरक्षण के लिए जरूरी है जागरूकता

जागरण संवाददाता, हल्द्वानी : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में मुख्य अतिथि स्वच्छग्रही की उपाधि प्राप्त सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. पीके शर्मा ने कहा कि हमें अपने जीवन में पानी के प्रति जागरूक होना होगा। हम सभी जागरूक हो जाएंगे तो तभी जल संरक्षित होगा। पेयजल संकट की समस्या नहीं झेलनी पड़ेगी।

भूगोल विभाग की ओर से 'जल संरक्षण: जागरूकता से चेतना की ओर' विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बोलते हुए डॉ. शर्मा ने कहा कि हमारे देश में पानी तो है, लेकिन पीने लायक नहीं रह गया है। इसे स्वच्छ बनाने व इसके संरक्षण को लेकर कार्य करने की आवश्यकता है। अगर लापरवाही बरतेंगे तो एक दिन गंभीर पेयजल संकट पैदा हो जाएगा। इस समस्या से निजात तभी मिलेगी जब हम अपने जीवन में पानी के प्रति सोचेंगे और उस पर अमल करेंगे। अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. एचपी शुक्ला ने कहा कि हम सभी को इसका बोध होना चाहिए और इसे गंभीरता से लेना चाहिए। कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्र ने कहा कि वर्तमान समय में जल संकट से निजात पाने के लिए लोगों में जन जागरूकता लाने की जरूरत है।

कार्यशाला में इंडिया वाटर पोर्टल के डॉ. सीरज केशर, कृषि एवं प्रौद्योगिकी

विश्वविद्यालय पंतनगर के डॉ. पीके सिंह ने जल संरक्षण को लेकर विस्तृत चर्चा की और कहा कि अगर समय रहते इस पर नहीं चेते तो आने वाले समय में पानी को लेकर गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। संचालन डॉ. शशांक शुक्ला ने किया। विज्ञान विभाग के निदेशक प्रो. पीडी पंत ने अतिथियों का आभार जताया। इस मौके पर समन्वयक मो. अकरम, निदेशक प्रो. गिरजा पांडेय, आयोजन सचिव डॉ. विरेंद्र कुमार, डॉ. कमल देवलाल, डॉ. एचसी जोशी, डॉ. चारु पंत, डॉ. श्याम कुंजवाल आदि थे।

पानी बचाने के लिए सोचना जरूरी: डा. शर्मा

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ साइंस के अंतर्गत भूगोल विभाग की ओर से मंगलवार को जल संरक्षण जागरूकता से चेतना की ओर विषय पर कार्यशाला हुई।

इसमें सहारनपुर से आए स्वच्छग्रही की उपाधि प्राप्त सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा. पीके शर्मा ने कहा कि हमें पानी के प्रति जागरूक होना जरूरी है। हमारे देश में पानी तो है, लेकिन पीने लायक पानी नहीं है। इसे स्वच्छ बनाने व इसके संरक्षण के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। यूओयू के कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्रा ने कहा कि जल संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करके ही इस समस्या से लड़ा जा सकता है। इंडिया वाटर पोर्टल के डा. सीराज केशर, पंतनगर विवि के डा. पीके सिंह ने भी जल संरक्षण पर जोर दिया।